ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; 7(9): 58-61
www.allresearchjournal.com
Received: 01-07-2021
Accepted: 05-08-2021

Dr. Pintu Kumar
Associate Professor of History, Motilal Nehru College Evening, University of Delhi, New Delhi, India

Moni
Ph.D. Scholar, Department of History, University of Delhi, New Delhi, India

Corresponding Author:
Dr. Pintu Kumar
Associate Professor of History, Motilal Nehru College Evening, University of Delhi, New Delhi, India

विकलांगता की परिभाषा और वर्गीकरण: आधुनिक सन्दर्भ

Dr. Pintu Kumar and Moni

DOI: https://doi.org/10.22271/allresearch.2021.v7.i9a.10344

सारांश
प्रस्तुत लेख को लिखने का उद्देश्य विकलांगता को आधुनिक संदर्भ में परिभाषित करना है। मनुष्य अपने पर्यावरण के साथ बातचीत करते समय विभिन्न चुनौतियों का अनुभव करता हैं खासकर जब उनके पास व्यक्तिगत बाधाएँ होती है। और विभिन्न मतों के कारण विकलांगता की परिभाषित करना आसान नहीं होता। विकलांगता को सामान्य शब्दों में परिभाषित किया गया हैं कि शरीर की सामान्य संरचना में कोई हानि या समस्या जो शरीर के सामान्य कामकाज में बाधा उत्पन्न करती हैं उसे विकलांगता कहा जाता है। जैसे देखना, सुनना, चलना व बोलना आदि। विकलांगता के प्रति लोगों की बढ़ती जागरूकता पूरी दुनिया में एक चिंता का विषय बन गया है। जिस कारण बड़े पैमाने पर समाज के दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण परिवर्तन दिखाई देता है। विकलांगता के वर्गीकरण में मदद करने के लिए चिकित्सा, सामाजिक क्षेत्रों/परिपेक्ष्यों, मनोवैज्ञानिक जैसे मॉडल विकसित किए गये है। तथा मानव विशेषता यह है कि वह अप्रिय होने पर भी अस्पष्टीकृत को समझने की स्वाभाविक इच्छा रखता है। इसीलिए विकलांगता को परिभाषित और वर्गीकृत करना आवश्यकता हो जाता है।

कूट शब्द: विकलांगता, परिभाषा, समाज, विश्व स्वास्थ्य संगठन, विकलांगता अधिकार आंदोलन, चिकित्सा, शरीर

प्रस्तावना
एक समतावादी और प्रगतिशील समाज कभी भी भौतिक पहचान के आधार पर लोगों (विकलांग) में भेदभाव की वकालत नहीं करता बल्कि यह हमेशा हर संभव तरीके से लोगों के हितों की रक्षा करता है। हालाँकि, अंतराष्ट्रीय क्षेत्र में वास्तविकता इसके विल्कुल विपरीत हैं क्योंकि शारीरिक रूप से स्वस्थ व्यक्तियों का जीवन के हर पहलू में खुले हाथों से स्वागत किया जाता है, चाहे वह शिक्षा हो, व्यवसाय हो या सामाजिक-आर्थिक भागीदारी हो, लेकिन दूसरी ओर विभिन्न संकायों में विकलांग लोगों की उपेक्षा की जाती है।[1] विकलांग लोग जीवन के किसी भी क्षेत्र में किसी से भी कमतर नहीं हैं। उनकी अपनी इच्छाएं, सपने, महत्वकांक्षाएं हैं और उन्हें संजोने व पूरा करने का विकलांग लोगों को भी पूरा अधिकार है। लेकिन दुर्भाग्य से तथाकथित समतावादी और प्रगतिशील समाजों को उनकी (विकलांग) चिंताओं और अधिकारों पर कोई ध्यान नहीं है। समाज के इस वर्ग के लिए दुनिया ने कई उदात्त आदर्शों, कानूनों, अधिनियमों, विकलांगों को परिभाषित करने के विभिन्न मॉडलों और कई कल्याणकारी नीतियों व कार्यक्रमों को बनाया/लाया है। लेकिन फिर भी हम समाज में मौजूद विकलांग लोगों को (जो कि समाज का अहम् हिस्सा होते है) हाशिए स्तर पर ही पाते है। वास्तव में जब हम आधुनिक भारत की बात करते हैं तो हमें बहुत से ऐसे विषय (विकलांग) नजर आते हैं जो हमेशा से ही छुपे हुए रहे हैं। ये ऐसे विषय रहे जिन्हें कभी भी अहम् नहीं समझा गया बल्कि ऐतिहासिक रूप से इनकी अवहेलना ही की गई। लेकिन इन विषयों ने समाज में सामाजिक और राजनैतिक चेतना जगाने का कार्य बखूबी किया हैं। अत: यह लेख विकलांगता की परिभाषा और विकलांगता संबंधित दृष्टिकोणों पर विस्तार से चर्चा कर समाज में मौजूद विकलांगता के हाशिए स्तर को जानने का प्रयास करेगा।

विकलांगता की परिभाषा
'विकलांगता' एक व्यापक शब्द है जो किसी व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, ऐन्द्रिक, बौद्धिक विकास में किसी भी प्रकार की कमी को दर्शाता हैं। जिसके लिए निर्योग्यता, अशक्तता, निशक्तता (विधि), अपंगता, अपांगता, अक्षम, अयोग्य आदि शब्दों का भी प्रयोग किया जाता हैं।[2] ऑक्सफ़ोर्ड डिक्शनरी के अनुसार विकलांगता को एक हानि के रुप में वर्णित किया जा सकता है जो संज्ञानात्मक, विकासात्मक, बौद्धिक, मानसिक, शारीरिक, संवेदी या इनमें से कुछ भी संयोजित हो सकती हैं। यह एक व्यक्ति के जीवन की गतिविधियों को काफी हद तक प्रभावित करती है और जो किसी व्यक्ति में जन्म से या व्यक्ति के जीवनकाल के दौरान मौजूद हो सकती हैं।[3] 'विकलांगता' शब्द शारीरिक व मानसिक रूप से असमर्थता या दुर्बलता को संयुक्त रूप से व्यक्त करने के लिये प्रयुक्त किया जाता है। जो कि व्यक्ति की कार्य करने की गतिविधियों को प्रतिबंधित करती

है। तथा उसके बाहरी वातावरण में भागीदारी को भी सीमित कर देती है।[4] वैसे अन्तराष्ट्रीय स्तर पर अभी तक विकलांगता की परिभाषा तथा उससे जुड़ी समस्याओं के लिये आम सहमति नहीं बन पाई हैं। विकलांगता कार्य एवं स्वास्थ्य के अंतराष्ट्रीय वर्गीकरण के अनुसार 'विकलांगता' व्यक्ति के स्वयं एवं बाहरी वातावरण में पाये जाने वाले स्वास्थ्य तथा उससे जुड़े कारकों के मध्य होने वाली एक गतिशील अंतक्रिया हैं।[5]

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 1976 में विकलांगता को परिभाषित करते हुए कहा था कि यह शारीरिक संरचना में, कार्य करने में मनोवैज्ञानिक रूप से व्यवहार में या शारीरिक रूप से किसी भी तरह से हुई हानि, क्षति या असंयोजन है।[6] वैसे विकलांगता को परिभाषित करना किसी भी तरह से आसान काम नहीं है। कई परिभाषाएं उन्नत की गई है, जो विविध मूल्यों और सैद्धांतिक आधारों पर आधारित हैं।[7] इसी प्रकार विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने विकलांगता को परिभाषित किया है कि "विकलांगता एक जटिल घटना है, जो किसी व्यक्ति के शरीर की विशेषताओं और उस समाज की विशेषताओं के बीच बातचीत को दर्शाती है जिसमें वह व्यक्ति रहता है।"[8]

विकलांगता की घटना मानव अनुभव का एक अनिवार्य हिस्सा है और इसे उस सामाजिक परिवेश से अलग नहीं किया जा सकता है जहां यह उत्पन्न होता है। यह सामाजिक संरचनाओं की परिधि के बाहर मौजूद नहीं हो सकता। बेशक, विकलांगता में एक व्यापक अवधारणा शामिल है, क्योंकि यह सामाजिक व्यवहार और सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग है। विकलांगता कुछ सिद्धांतों का परिणाम हैं, जो इसे एक सामाजिक घटना बनाते है। इसका तात्पर्य यह है कि विकलांगता सामाजिक रूप से निर्मित और सांस्कृतिक रूप से विस्तृत होती है। सामाजिक स्तर पर विकलांगता की कल्पना और निदान कैसे किया जाता है, यह विकलांग व्यक्तियों के प्रति सार्वजनिक धारणा में परिलक्षित होता है। दूसरे शब्दों में, शारीरिक, मानसिक या संवेदी अक्षमता केवल एक व्यक्ति की विशेषता नहीं है, बल्कि परिस्थितियों, गतिविधियों और संबंधों का एक जटिल संचय है। यही कारण है कि विद्वानों ने विकलांगता की समस्या को मानवाधिकारों या सामाजिक-राजनीतिक दृष्टिकोण के व्यापक रूप में देखा है।[9] वस्तुतः विकलांगता मुख्य रूप से विकलांग व्यक्तियों की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं के अनुकूल समाज के मानदंडों और अपेक्षाओं के अनुकूल होने की अक्षमता के कारणों से उत्पन्न होती है।

स्वाभाविक रूप से सामाजिक पर्यावरण कई मायनों में प्राकृतिक पर्यावरण से काफी अलग है। माइकल ओलिवर के अनुसार इस द्विभाजन का विश्लेषण निम्नलिखित चार तरीकों से किया जा सकता है। सबसे पहले, मनुष्य सामाजिक परिवेश की वस्तुओं को अर्थ प्रदान कर, अपनी धारणा के अनुसार अपने व्यवहार को उनके प्रति उन्मुख करता है।[10] डब्ल्यू आई थॉमस संक्षेप में, इसे इन शब्दों में जोड़ते हैं; "यदि पुरुष परिस्थितियों को वास्तविक के रूप में परिभाषित करते हैं, तो वे अपने परिणामों में वास्तविक होते हैं।"[11] जहां तक विकलांगता की अवधारणा का संबंध है, तो इसे एक त्रासदी के रूप में मानते हुये, विकलांगों के साथ व्यवहार किया जाता है।

दूसरे, आधुनिक औद्योगिक रूप से समृद्ध समाजों में बढ़ती शहरी गरीब आबादी को पहचानने और वर्गीकृत करने की वांछनीयता के कारण परिभाषाएं महत्वपूर्ण हैं। पहचान और वर्गीकरण की इस प्रक्रिया में, विकलांगता हमेशा एक प्रमुख श्रेणी रही है, क्योंकि यह उन सभी लोगों को एक वैध सामाजिक अवस्था प्रदान करती है, जिन्हें "ऐसा करने के लिए अनिच्छुक के रूप में वर्गीकृत किये जा सकने वाले लोगों के विपरीत काम करने के लिए अनिच्छुक" के रूप में माना जा सकता है।[12]

तीसरा, विकलांगता अधिकार आंदोलन के उदय के कारण परिभाषाएं भी आवश्यक है।[13] यह उल्लेखनीय है कि 1950 के दशक के बाद से ही यह अहसास बढ़ता रहा है कि यदि विशेष सामाजिक समस्याओं को हल करना है, या कम से कम करना है, तो समस्या के मौलिक पुनर्वितरण से अधिक या कुछ कम भी आवश्यक नहीं है। सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में वैचारिक स्पष्टता के महत्व पर प्रकाश डालते हुए वैन डाइक (1960) स्पष्ट रूप से लिखते है, "ज्ञान प्राप्त करने, पूछताछ का मार्गदर्शन करने और ज्ञान व्यक्त करने में अवधारणाओं का मौलिक महत्व है"।[14]

विकलांग लोगों ने भी यह महसूस किया हैं कि विकलांगता की प्रचलित परिभाषाएं विकलांग व्यक्ति और उसके समूह क्षेत्र की पहचान के लिए समस्याएं खड़ी करती हैं तथा इस तरह विकलांगता सबंधित परिभाषाएं विकलांगता के मिथक को तोड़ती है। चाहे वह आक्रामक हो या नहीं। और ऐसा भी लगता है कि विकलांग लोगों में समूह चेतना और पहचान की बढ़ती भावना को बहुत हद तक प्रत्यारोपित किया गया है। अंत में, सबसे निर्णायक कारक यह है कि 1950 के दशक के उत्तरार्ध से, अर्थव्यवस्था में तेजी आई और लगातार बढ़ती राष्ट्रीय देखभाल से विकलांग व्यक्तियों को अधिक सेवाएं प्रदान करने की चिंता बढ़ती रही है।[15] हालांकि, किसी भी सरकार (जो भी क्रय-विक्रय करती है) से यह उम्मीद नहीं की जा सकती कि वह इस तरह की प्रतिबद्धता के वित्तीय निहितार्थ को पूरा करें या इसके बारे में कुछ विचार किए बिना सेवाओं की एक पूरी श्रृंखला के लिए खुद को प्रतिबद्ध करें।

अब सवाल यह उठता है कि जब हम कहते हैं कि कोई विकलांग है तो हमारा क्या मतलब है? विकलांगता को परिभाषित करने का कोई आसान तरीका नहीं है। इसे विविध दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है। इसलिए, विकलांगता को परिभाषित करने के तरीकों की जांच करना वांछनीय लगता है और यह भी कि इसे कौन परिभाषित करता है। हालांकि, विकलांगता के स्तर पर, यह निर्धारित करने में समस्या है कि किसे विकलांग माना जाना चाहिए और किसे नहीं? इस संबंध में क्या मापदंड अपनाए जाने चाहिए? क्या हल्का हकलाना एक भाषण विकार का गठन करता है और क्या लंगड़े व्यक्ति को शारीरिक रूप से अक्षम माना जाना चाहिए? क्या एक आँख वाले व्यक्ति और पूरी तरह से अंधे व्यक्ति के बीच कोई अंतर है? क्या एक व्यक्ति, जो चलते समय लंगड़ाता है, उस व्यक्ति से भिन्न होता है जिसके दोनों पैर पूरी तरह से लकवाग्रस्त हैं? लोगों को आमतौर पर अक्षम के रूप में कार्य या व्यवहार के स्वीकृत मानदंड से बाहर रखकर रेखांकित किया जाता हैं।

इस प्रकार, विकलांगता की अवधारणा अंततः सामाजिक निर्णय द्वारा निर्देशित होती है। विकलांगता की पहचान और मूल्यांकन में दो चीजें शामिल हैं: पहली यह कि विकलांगता क्या है? व इसकी पहचान कैसे की जा सकती है? और दूसरी, कब किसी से अक्षमता की समस्या की भयावहता का आकलन करने की उम्मीद की जा सकती है? इस प्रकार, निश्चित मुद्दे सैद्धांतिक और नीति-उन्मुख दोनों अध्ययनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विकलांगता के अधिकांश मॉडल इस सैद्धांतिक धारणा पर आधारित हैं कि विकलांग लोगों की समस्याएं और कठिनाइयाँ सीधे उनकी शारीरिक, संवेदी या बौद्धिक दुर्बलताओं से उत्पन्न होती हैं। इसे अधिक केन्द्रित रूप से कहे तो, मुख्यतः रूढ़िवाद विकलांगता को व्यक्तिगत रूप से देखता है और वास्तविक समस्याओं को एक उत्पन्न अक्षमता के रूप में माना जाता है।[16]

इस प्रकार सामाजिक-राजनीतिक प्रतिमान शारीरिक और सामाजिक वातावरण को विकलांगता के प्रमुख निर्धारकों के रूप में मानता है। इन प्रतिमानों को आगे विभिन्न उपशीर्षकों में विभाजित किया जा सकता है- जैसे कि चिकित्सा/नैदानिक, मनोवैज्ञानिक, आर्थिक व्यावसायिक, अल्पसंख्यक समूह, मानवाधिकार और सामाजिक राजनीतिक दृष्टिकोण।

विकलांगता के मॉडल और उनके प्रभाव

(I) चिकित्सा/नैदानिक दृष्टिकोण: यह विकलांगता के अध्ययन के लिए सबसे पुराना, सबसे पारंपरिक और प्रमुख दृष्टिकोण (सेवा प्रावधान के दृष्टिकोण से) है। विकलांगता के प्रति अधिकांश दृष्टिकोण इस धारणा पर आधारित हैं कि विकलांग व्यक्तियों द्वारा अनुभव की जाने वाली समस्याएं और कठिनाइयां सीधे उनकी व्यक्तिगत शारीरिक, संवेदी या बौद्धिक दुर्बलताओं से संबंधित हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (1980) ने विकलांगता को क्षीणता, अपंगता और विकलांगता जैसे शब्दों का उपयोग कर परिभाषित किया, जो 'विकलांगता के चिकित्सा मॉडल' पर आधारित है।[17] विकलांगता के चिकित्सा मॉडल ने व्यक्तिगत सीमाओं

और उन कमियों को कम करने के तरीकों पर ध्यान केंद्रित किया जिससे वे समाज के अनुकूल बनकर अनुकूलित तकनीक का उपयोग कर सकें।

(II) मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण: मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण विकलांगता की शुरुआत से उत्पन्न कुछ मनोवैज्ञानिक गड़बड़ी के संदर्भ में विकलांगता को देखता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से विकलांगता के मुद्दे को समझने वाले विद्वानों में बार्कर, अल्बेच्ट और रोस्लर (बार्कर एट अल, 1953, अल्ब्रेक्ट, 1976; रोसेलर और बोल्टन, 1978) के नाम उल्लेखनीय हैं।[18] इस विचारधारा के नायकों ने इस विचार को पुष्ट किया है कि विकलांग व्यक्ति न केवल खोए हुए अंगों या संवेदी अंगों वाले व्यक्ति हैं, बल्कि वे व्यक्ति हैं जिनमें जबरदस्त क्षमता और चिंतनशील दिमाग है।

(iii) आर्थिक व्यावसायिक दृष्टिकोण: विकलांगता के लिए आर्थिक या व्यावसायिक दृष्टिकोण व्यक्ति और समाज के बीच संबंध स्थापित करने का प्रयास करता है। यह दृष्टिकोण विकलांग लोगों द्वारा किए गए कार्य की मात्रा या प्रकार पर स्वास्थ्य संबंधी सीमा पर जोर देता है दूसरे शब्दों में, यह दृष्टिकोण विकलांगों की व्यावसायिक सीमाओं पर केंद्रित है। विकलांगता के लिए आर्थिक व्यावसायिक दृष्टिकोण कई विद्वानों, राष्ट्रीय के साथ-साथ अंतराष्ट्रीय निकायों से जुड़ा हुआ है, हालांकि, इस दृष्टिकोण को 1976 में बर्कविट्ज़ जॉनसन और मर्फी द्वारा सार्वजनिक नीति के प्रकाशन के साथ सैद्धांतिक अभिविन्यास मिला है।[19] इस दृष्टिकोण के समर्थकों का सुझाव है कि विकलांग लोगों की रोजगार समस्याएं दोषपूर्ण आर्थिक प्रणालियों और ऐसे वंचित व्यक्तियों की कमियों से उत्पन्न होती हैं।[20]

(v) अल्पसंख्यक समूह दृष्टिकोण: विकलांग लोगों की स्थिति का वर्णन करने, उन्हें मुख्यधारा में लाने, समानता और गैर-भेदभाव सुनिश्चित करने के उद्देश्य से विकलांगों के लिए क़ानूनी उपाय व नीतियां तैयार करने के लिए अल्पसंख्यक समूह की अवधारणा को भी लागू किया गया है। यह स्पष्ट है कि विकलांग और अन्य अल्पसंख्यक समूहों के बीच बहुत सारी समानताएं है - जैसे कि महिलाएं, वृद्ध, दलित आदिवासी, अश्वेत, गरीब और साथ ही समाज के अन्य कमजोर वर्ग आदि। इतनी समानताएं साक्ष्य देती है कि उन सभी के साथ जनसंख्या की श्रेणी के रूप में व्यवहार कर उनके प्रति प्रतिक्रियाएं व्यक्त की जाती है। वे सभी निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति में राजनीतिक रूप से शक्तिहीन, उत्पीड़ित नकारात्मक रूप से रूढ़िबद्ध और भेदभावपूर्ण है। विकलांगता के संबंध में अल्पसंख्यक समूह का दृष्टिकोण इस मुद्दे को दर्शाता है कि व्यक्तियों के साथ लोग अभी तक रक्षात्मक कार्यवाई के लिए या अपने अधिकारों की रक्षा के लिए व्यक्तियों के समूह के रुप में समेकित नहीं हुए है।[21]

(vi) मानवाधिकार दृष्टिकोण: हाल ही में, वैश्विक विकलांगता अधिकार आंदोलन के माध्यम से विकलांगता को समझने के माध्यम में बदलाव लाया गया है। विकलांगता में मानवाधिकार के मुद्दे को लाकर अधिक समावेशी दृष्टिकोण लाया गया, जिसमें कहा गया है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी व्यक्तिगत प्रतिभा विकसित करने और उसे व्यक्त करने के लिए समान अवसर प्राप्त करने का अधिकार है। यह प्रतिमान समाज में योगदान करने वाले अंतर्निहित मानव मूल्यों को किसी व्यक्ति की सभी व्यक्तियों के मूल्यों को स्वीकार करने के लिए मजबूत करता है। कार्यात्मक क्षमता पर आधारित मूल्यों के बजाय मानव परिवार के सभी सदस्यों की अंतर्निहित गरिमा, समान अपरिहार्य और अधिकारों की मान्यता दुनिया में स्वतंत्रता, न्याय और शांति की नींव है। सभी मनुष्य जन्म से स्वतंत्र, समान अधिकार व प्रतिष्ठा में समान है। यह मॉडल मानता है कि विकलांग व्यक्ति सबसे पहले एक इंसान है, जिनकी बुनियादी जरूरतें बाकी मानवों की तरह है जैसे भोजन, कपड़ा, आश्रय, शारीरिक जरूरतें आदि। ये जरूरतें उन्हें आत्म-पूर्ति, सुरक्षा, प्यार की भावना, आत्मसम्मान, नए अनुभवों के अवसर, व्यक्तिगत विकास रचनात्मकता या महारत में योगदान करती है।

(viii) सामाजिक-राजनीतिक दृष्टिकोण: हाल ही में सामाजिक-राजनीतिक दृष्टिकोण विकलांगता के लिए बने चिकित्सा दृष्टिकोण के खिलाफ प्रतिक्रिया के रूप में उभरा है। यह दृष्टिकोण विकलांगों के बीच पारंपरिक दृष्टिकोण के प्रति असंतोष की गहरी भावना से विकसित हुआ है। समाज में अधिकांश अल्प-विशेषाधिकार प्राप्त अल्पसंख्यक समूहों (दलित, विकलांग, महिलाएं, वृद्ध) के विचारों की अवहेलना और दमन हमेशा से ही होता रहा है। जिसके परिणामस्वरूप, हाल के वर्षों के दौरान विकलांगता के मुद्दे में आमूल-चूल परिवर्तन आया है, और विकलांगता का ध्यान एक चिकित्सा/नैदानिक समस्या के विशुद्ध रूप से निकलकर मानव अधिकारों और सामाजिक-राजनीतिक समस्या पर केंद्रित हुआ है। मूल रूप से लेबलिंग या कलंक के समाजशास्त्रीय सिद्धांतों का चित्रण करते हुए, सामाजिक-राजनीतिक दृष्टिकोण विकलांगता को व्यक्ति और पर्यावरण के बीच बातचीत के उप-उत्पाद के रूप में मानता है। यह दृष्टिकोण मानता है कि विकलांगता के मूलभूत प्रतिबंध विकलांग व्यक्तियों के बजाय सामाजिक वातावरण में स्थित हैं।[22]

इस प्रकार ये दृष्टिकोण विकलांगता के विभिन्न पहलुओं को पूरी तरह से रेखांकित करने में विफल रहे हैं। अर्थात् संयुक्त राष्ट्र द्वारा अपनाई गई 'विकलांग' शब्द की सर्वाधिक स्वीकार्य और संतोषजनक परिभाषा जो विकलांगता अधिकारों के कन्वेंशन (2006) की प्रस्तावन में रखी गई कि "विकलांगता विकलांग व्यक्तियों और व्यवहार और पर्यावरणीय बाधाओं के बीच बातचीत से उत्पन्न होती है जो दूसरों जे साथ समान आधार पर समाज में उनकी पूर्ण और प्रभावी भागीदारी में बाधा डालती है।" यह कन्वेंशन आगे इस बात पर जोर देता है कि "विकलांग व्यक्तियों में वे लोग शामिल हैं जिनके पास दीर्घकालीन शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक या संवेदी हानि है।"

दोनों अभिव्यक्तियाँ एक चिकित्सा मॉडल से विकलांगता के सामाजिक मॉडल में बदलाव को दर्शाती हैं। चिकित्सा मॉडल में, कुछ शारीरिक, बौद्धिक, मनोवैज्ञानिक और मानसिक अक्षमताओं वाले व्यक्तियों को विकलांग माना जाता है। इसके अनुसार, विकलांगता व्यक्ति में निहित है क्योंकि यह इलाज़, उपचार और पुनर्वास के माध्यम से पर्यावरण के साथ समायोजन के बोझ के साथ गतिविधि के प्रतिबंधों के बराबर है। दूसरी ओर, सामाजिक मॉडल उस समाज पर ध्यान केंद्रित करता है जो विकलांग व्यक्तियों के व्यवहार पर अनुचित प्रतिबंध लगाता है। इसमें विकलांगता व्यक्तियों में नहीं, बल्कि व्यक्तियों और समाज के बीच परस्पर अंतक्रियाओं में निहित है। यह वकालत करता है कि विकलांग व्यक्ति अधिकार धारक हैं और समाज में संस्थागत, भौतिक, सूचनात्मक और व्यवहार संबंधी बाधाओं को दूर करने के लिए प्रयासरत हकदार है।

चिकित्सा मॉडल और सामाजिक मॉडल को अक्सर द्विभाजित के रुप में प्रस्तुत किया जाता हैं, लेकिन विकलांगता को न तो विशुद्ध रुप से चिकित्सा के रुप में देखा जाना चाहिए और न ही विशुद्ध रुप से सामजिक : विकलांग व्यक्ति अक्सर अपनी स्वास्थ्य स्थिति से उत्पन्न होने वाली समस्याओं का अनुभव कर सकते हैं। विकलांगता के विभिन्न पहलुओं को उचित महत्व देते हुए एक संतुलित दृष्टिकोण की आवश्यकता है।[23] जैसे देस्पौय कहते है कि एक सामान्य व्यक्ति और/या सामाजिक जीवन की आवश्यकताएं उसकी शारीरिक या मानसिक क्षमताओं में जन्मजात कमी के परिणामस्वरूप होती हैं।[24]

निष्कर्ष

विकलांगता अधिकारों का मुद्दा उपभोग के बारे में इतना अधिक नहीं है, जितना विकलांगों द्वारा बिना किसी भेदभाव के सभी मानव अधिकारों के समान प्रभावी आनंद को सुनिश्चित करने से संबंधित है। इसीलिए गैर-भेदभाव और विकलांगों द्वारा सभी मानवाधिकारों का समान प्रभावी उपभोग दुनिया भर में विकलांगता का प्रमुख मुद्दा रहा है। और पिछले कुछ दशकों से विकलांगता के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में भी रुचि बढ़ी है। ताकि उन्हें समान अधिकार व समान अवसर दिये जाये। इस लेख द्वारा आधुनिक समय में विकलांगता की जटिल अवधारणा की परिभाषा का विस्तृत वर्णन करते हुए विकलांगता को विभिन्न मॉडलों द्वारा वर्गीकृत कर उन पर चर्चा की गई। और कहा का सकता है कि विकलांगता की

परिभाषा और वर्गीकरण को बहुत से विरोधों का सामना करना पड़ा है। इसीलिए विकलांगता को समझने के लिए हमें आपसी समझ तक पहुँचने के प्रयास किये जाने चाहिए।

संदर्भ सूची

1. Leni, Chavdhuri. 'Disability in India: Issues and concerns', ESS, conference paper, May. 2021; c2006.
2. विकलांगता की परिभाषा- http://www.hwd.up.nic.in/about_ushtm. Access in August, 2021.
3. Disability/Definition of Disability by Merriam-Webster www.merriam-webster.com/dictionary/disability.access on August, 2021.
4. डॉ. जगदीस सिंह और डॉ. मीता सोलंकी। मानवाधिकार एवं विकलांगता, कल्पना प्रकाशन, दिल्ली 110033; 2014. p. 9.
5. International Classification of functioning, Disability and health Geneva, world Health Organisation; c2001.
6. Disability Manual Published by National Human Rights Commission; c2005.
7. Karna GN. Disability Studies in India retrospect's and prospects, Gyan publishing house new Delhi-110002. Introduction; c2001.
8. WHO define disability.
9. Ibid, p. 25.
10. Oliver M. The Politics of Disablement (Basingstoke: Macmillan); c1990.
11. Karna GN. Disability Studies in India retrospect's and prospects, Gyan publishing house new Delhi-110002; c2001. p. 29-30.
12. Ibid,
13. Karna GN, Gaharana Kanan. Disability and the rights of disabled persona, in: K.P. Saksena (Ed) Human Rights: Perspectives and Challenges beyond 1990, (New Delhi; Lancer Books); c1994. p. 60-63.
14. Vari Dyke, Vemon. Political Science: A Philosophical Analysis, California: Stanford University, Press; c1960. p. 64.
15. Oliver M. The Politics of Disablement, Basingstoke: Macmillan; c1990. p. 3-4.
16. Karna GN. Disability Studies in India retrospect's and prospects, Gyan publishing house new Delhi-110002; 2001. p. 34.
17. Wood P. International Classification of Impairments, Disabilities and Handicaps (Geneva: WHO); c1981.
18. Karan G. Disability Studies in India: Retrospect's and Prospects. New Delhi: Gyan Publication; c2001. p. 41.
19. Berkowitz, Edward D. Disability Policies and Government Programs, New York: Praeger; c1979.
20. Hahn, Harlan. Disability and rehabilitation policy: Is paternalistic neglect really benign? Public Administration Review. 1982;42(4):385-389.
21. Karan G. Disability Studies in India: Retrospect's and Prospects. New Delhi: Gyan Publication; c2001. p. 50-51.
22. Hahn, Harlan. Disability and rehabilitation policy: Is paternalistic neglect benign? Public Administration Review. 1982;42(4):385-389. And Oliver, M. (1990) The politics of Disablement, Basingstoke: Macmillan. And French, Sally (Ed) (1994) On Equal Terms: Working with Disabled People, Oxford: Butterworth Heinemann. And Bowe, Frank (1980) Rehabilitating America; Toward Independence for Disabled and Elderly People, New York; Harper & Row.
23. Despouy, Leandro. Human Rights and Disabled Persons, New York; United Nations, UN Publication, Sales No. E92; c1993.
24. WHO and world bank report on disability; c2011.